पढ़िएगा जरूर

समसामयिक विषयों और आध्यात्मिक भाव-बोध की कविताएं

*'**जन्म** का ऋण/मरकर समाप्त होता है/कर्म का ऋण/भोगकर समाप्त होता है।'*

–ऋण और कर्म जीवन के दो ओर-छोर हैं। एक से जीवन शुरू होता है, दूसरे से आगे बढ़ता है। और, फिर अंत में उसी शुरुआत से जीवन का अंत हो जाता है। इनसान अपने पूर्व जन्मों के ऋण के कारण किसी योनी में जन्म लेता है। यानी इनसान अपने ऋण के साथ जन्म लेता है। और इस ऋण की अदायगी के साथ इस जीवन से विदा लेता है। लेकिन अध्यात्म के नजरिये से देखा जाए तो इनसान का पूरा जीवन या कहें जन्म-दर-जन्म इस ऋण की अदायगी को चुकाने का प्रयास होता है। आम नजरिये से भले ही हम कह दें कि जन्म का ऋण मरकर समाप्त होता है। लेकिन यह

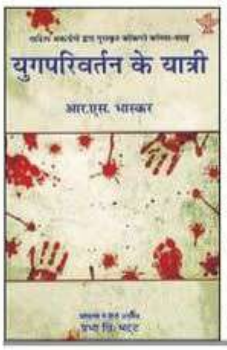

पुस्तक : युगपरिवर्तन के यात्री (कविता-संग्रह)
लेखक : आर.एस.भास्कर
कोंकणी से हिंदी अनुवाद : प्रभा वि. भट्ट
प्रकाशक : साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
मूल्य : 130 रुपये

तय है कि कर्म का ऋण केवल और केवल भोगकर ही समाप्त होता है। यहां दान-पुण्य, पूजा-पाठ जैसा कोई शार्टकट नहीं चलता। यहां केवल भोगना होता है। तभी कर्म के ऋण से छुटकारा मिलता है।

यहां उपर्युक्त छोटी-सी कविता में जीवन-कर्म और ऋण के संबंध को बहुत बारीकी से समझाया गया है। ये पंक्तियां साहित्य अकादेमी से पुरस्कृत कोंकणी कविता-संग्रह 'युगपरिवर्तन के यात्री' से हैं। इसके लेखक प्रसिद्ध कोंकणी कवि आर. एस. भास्कर हैं। संग्रह में छप्पन कविताएं हैं। 'कालनेमी पक्षी', 'सपने चाहिए', 'फूल को स्वतः खिलने दो', 'मन्नत का मुर्गा', 'पिंजरे में बंद तोता', 'दौड़ना भूल गया', 'शाश्वत रह गए', 'वृद्ध पीपल' और 'कश्मीर में रहनेवाले मेरे भाई' जैसी समसामयिक विषयों के साथ-साथ आध्यात्मिक भाव-बोध से भरी कविताएं भी इस संग्रह में हैं।